बॉडी लेंग्वेज और शब्दों के मायने

डॉ. डी. बालसुब्रमण्यन

लोग बोलते हुए शारीरिक हावभावों का इस्तेमाल करते हैं। कुछ लोग शरीर की भाषा का इस्तेमाल ज़्यादा करते हैं, तो कुछ कम। खास तौर से इतालवी लोग इसके लिए मशहूर हैं। भारतीय भी पीछे नहीं हैं। ऐसा कहते हैं कि यदि आप किसी तमिलभाषी को बोलते समय सिर हिलाने से रोक दें, तो वह अवाक हो जाता है। इसी प्रकार से यदि आप किसी इतालवी (या आजकल के किसी युवा अमरीकी) को बोलते समय अपने हाथ न हिलाने दें, तो वह चुप हो जाएगा। सवाल यह उठता है कि क्या शारीरिक हावभाव आपके द्वारा बोले गए शब्दों के अर्थ को बढ़ाते-घटाते हैं?

ऐसा लगता है कि इस तरह का गैर-शाब्दिक व्यवहार बोले गए शब्दों को आकार देता है। हो सकता है कि ऐसा व्यवहार शब्दों के अर्थ में पूरक का काम करे या उसे बढ़ा दे। इस तरह से यह बातों में बारीकियां पैदा करता है।

ये बारीकियां सकारात्मक हो सकती है (जैसे हां कहते वक्त हम सिर हिलाते हैं)। या यह भी हो सकता है कि गैर-शाब्दिक ढंग से हम जो कुछ व्यक्त करते हैं उससे उन्हीं शब्दों का वैकल्पिक अर्थ स्पष्ट हो जाए। ऐसा गैर-शाब्दिक व्यवहार आवाज़ के उतार-चढ़ावों, चेहरे के भावों या कंधे उचकाकर प्रकट किया जा सकता है।

इस तरह के व्यवहार आजकल बच्चों द्वारा इस्तेमाल किए जाने शब्द 'व्हाटएव्हर' के साथ बहुत देखने को मिलता है। वे यह शब्द एक ऊब के साथ बोलते हैं और साथ में चेहरे या हाथों को किसी खास ढंग से उपयोग करते हैं।

सवाल है कि शारीरिक हावभाव किस हद तक बोले गए शब्दों या शब्दावली में योगदान देते हैं। यह संज्ञान वैज्ञानिकों के बीच शोध का विषय रहा है। इस सवाल में रुचि कई वजह से है। रुचि का एक कारण यह है कि क्या किसी बच्चे को शब्द सिखाने और शब्दावली बढ़ाने में मदद देने में हावभाव का सहारा लिया जा सकता है।

रुचि का दूसरा कारण टेलीफोन, स्काइप या अन्य टेक्नॉलॉजी की मदद से होने वाली सामूहिक चर्चाओं और सम्मेलनों के वार्तालाप से सम्बंधित है। ऐसी टेक्नॉलॉजी का उपयोग करते हुए शारीरिक हावभाव या चेहरे के भाव नदारद ही रहते हैं।

इस संदर्भ में एक नया विकास 'सेल्फ एनिमेटेड अवतारों' का है। इनमें सहभागियों से कहा जाता है कि वे आभासी यथार्थ (वर्चुअल रिएलिटी) सूट पहनें। इन सूट्स की विशेषता यह है कि ये शरीर की हरकतों को पहचानकर उन्हें पुनः प्रस्तुत कर सकते हैं। सहभागियों से उम्मीद होती है कि वे ये सूट पहनकर अन्य लोगों से अंतर्क्रिया करें। इस जुम्ले में प्रयुक्त अवतार शब्द का मतलब आप समझ ही गए होंगे।

सवाल यह उठता हैः क्या सेल्फ एनिमेटेड अवतार पहले की अपेक्षा अंतर्वैयक्तिक संप्रेषण को बेहतर बनाते हैं? क्या ये अवतार उन अवतारों से बेहतर हैं, जिन्हें जानबूझकर अचल रखा जाता है, यानी जिनमें शरीर की हरकतों और हावभावों को ओझल कर दिया जाता है? जर्मनी के मैक्स प्लैंक इंस्टीट्यूट में बायोलॉजिकल सायबरनेटिक्स विभाग के वैज्ञानिकों ने कोरिया विश्वविद्यालय के वैज्ञानिकों के साथ मिलकर इसी सवाल का जवाब तलाशने का प्रयास किया। उन्होंने अपने निष्कर्ष अक्टूबर 2011 में ऑनलाइन पत्रिका *प्लॉस वन* में प्रकाशित किए हैं।

उन्होंने अपने प्रयोगों में सहभागियों की जोड़ियां ली थीं। दोनों को आभासी परिवेश डिस्प्ले सूट पहनाया गया था। प्रयोग के दौरान एक सहभागी को दूसरे को कतिपय शब्दों के अर्थ समझाना होता था। ये सहभागी सिर्फ अवतारों के ज़रिए ही एक-दूसरे से संवाद कर सकते थे (रूबरू

)

नहीं)। एक प्रयोग था जिसमें दोनों सहभागी एनिमेटेड अवतार का इस्तेमाल करते थे, जबकि दूसरे प्रयोग में अवतार जड़ थे (हावभावहीन थे या पूर्व रिकॉर्डेड हावभाव का ही उपयोग करते थे)।

सबसे बढ़िया प्रदर्शन उसी स्थिति में देखा गया जब दोनों अवतार सम्बंधित व्यक्ति की गतियों के अनुरूप हरकत कर सकते थे। इसका मतलब यह हुआ कि 'बॉडी लेंग्वेज' समझ के लिहाज़ से महत्त्वपूर्ण होती है।

जब अवतार जड़ थे, उस स्थिति में परिणाम कमज़ोर रहे। शोधकर्ताओं ने पाया कि आभासी परिवेश का उपयोग करके होने वाला संप्रेषण उतना प्रभावी नहीं था जितना वास्तविक (आमने-सामने की) स्थिति में होता है। आभासी परिवेश मदद तो करता है मगर वास्तविकता का मुकाबला नहीं कर सकता। अलबत्ता, ऐसे आभासी परिवेश का इस्तेमाल मेडिकल प्रशिक्षण, शहरी नियोजन, और दूर-संचार में किया जा सकता है।

लगता है कि बॉडी लेंग्वेज संप्रेषण की दृष्टि से महत्त्वपूर्ण है; चाहे वह बॉडी लेंग्वेज वास्तविक व्यक्ति की हो या उसके अवतार की। गौरतलब बात यह है कि जहां वास्तविक व्यक्ति का शरीर सजीव है वहीं अवतार एक बनावटी चीज़ है। जब बॉडी लेंग्वेज अंतर्वैयक्तिक संप्रेषण में एक महत्त्वपूर्ण स्थान हासिल कर लेता है, तो ज़ाहिर है इसका एक जीव वैज्ञानिक आधार होगा, जैव विकास में इसका आधार होगा।

यदि हम एक मानव शिशु को देखें, तो यह बात एकदम साफ हो जाती है। मानव शिशु करीब 9 माह की उम्र में संप्रेषण के लिए हावभावों का उपयोग शुरू कर देता/देती है। हावभावों के ज़रिए वह न सिर्फ अपनी ज़रूरतों को व्यक्त करता है, बल्कि अपनी पसंद-नापसंद, दिलचस्पी भी व्यक्त करने लगता है। और यह भी देखा गया है कि बच्चों के हावभाव और माता-पिता के हावभावों के बीच सीधा सम्बंध होता है।

और तो और, बच्चों के शुरुआती हावभाव उसकी भावी शब्द सामर्थ्य का भी पूर्वानुमान देते हैं। जो बच्ची जल्दी हावभाव दर्शाना शुरू कर दे, या जिसके साथ जल्दी ही हावभावों का इस्तेमाल करना शुरू कर दिया जाए, उसमें आगे चलकर शब्द सामर्थ्य का विकास भी बेहतर होता है, बनिस्बत उन बच्चों के जिनके साथ हावभाव के साथ संप्रेषण देर से शुरू किया जाता है। यह बात सुसन गोल्डन मिडो व उनके साथियों ने डेवलपमेंट साइन्स में प्रकाशित अपने शोध पत्र में स्पष्ट की थी।

जब बच्चा किसी गुड़िया की ओर इशारा करे, और उसकी मां कहे कि 'हां, यह गुड़िया है' तो बच्चे को उसके इशारे से जुड़ा एक शब्द मिल जाता है। इसी वजह से स्कूल-पूर्व और किंडरगार्डन के शिक्षकों को सलाह दी जाती है कि वे बच्चों को कविताएं या गीत सिखाते वक्त हावभावों का खुलकर उपयोग करें।

हावभाव आधारित संप्रेषण चिम्पैंज़ी, ओरांगुटान जैसे अन्य प्रायमेट जंतुओं में काफी आम चीज़ है। ये बोल तो नहीं सकते मगर हाथ-पैरों की हरकतों की मदद से एक-दूसरे से और अपनी देखभाल करने वाले इंसानों से संवाद करते हैं। अटलांटा स्थित एमरी विश्वविद्यालय की डॉ. एमी पोलिक इन जानवरों में हाथों की 31 गतियों तथा चेहरे/आवाज़ के 18 हावभावों को अलग-अलग पहचान पाई हैं।

डॉ. पोलिक ने यह भी बताया है कि जहां वाणी के 'जुम्लों' या 'शब्दों' के अर्थ सीमित होते हैं, वहीं हाथों की हरकतें अलग-अलग संदर्भ में कई अलग-अलग अर्थ व्यक्त कर सकती हैं। एक मज़ेदार बात यह है कि हाथ फैलाकर भोजन की याचना करना एक ऐसा संकेत है जो हमने विकास की यात्रा में चिम्पैंज़ी से विरासत में पाया है।

इससे लगता है कि हावभाव, शारीरिक संकेत/इशारों का जैव विकास में एक इतिहास है। इसका सबसे ताज़ा उदाहरण रेवन नामक कौवा है। पता चला है कि रेवन अपनी चोंच से एक-दूसरे का ध्यान किसी वस्तु की ओर आकर्षित करते हैं, जैसे कह रहे हों, 'ये देखो।' विएना के सिमोन पाइका और थॉमस बगन्यान का यह अध्ययन *नेचर कम्यूनिकेशन्स* नामक शोध पत्रिका में प्रकाशित हुआ है। तो 'हावभावों की भाषा में बातचीत' करने वाले अगले जंतु कौन-से होंगे - केंकड़े, मछलियां, बैक्टीरिया? क्या हम मानें कि बैक्टीरिया अपने फ्लेजिला की गति से कुछ कहते हैं? ***(स्रोत फीचर्स)***